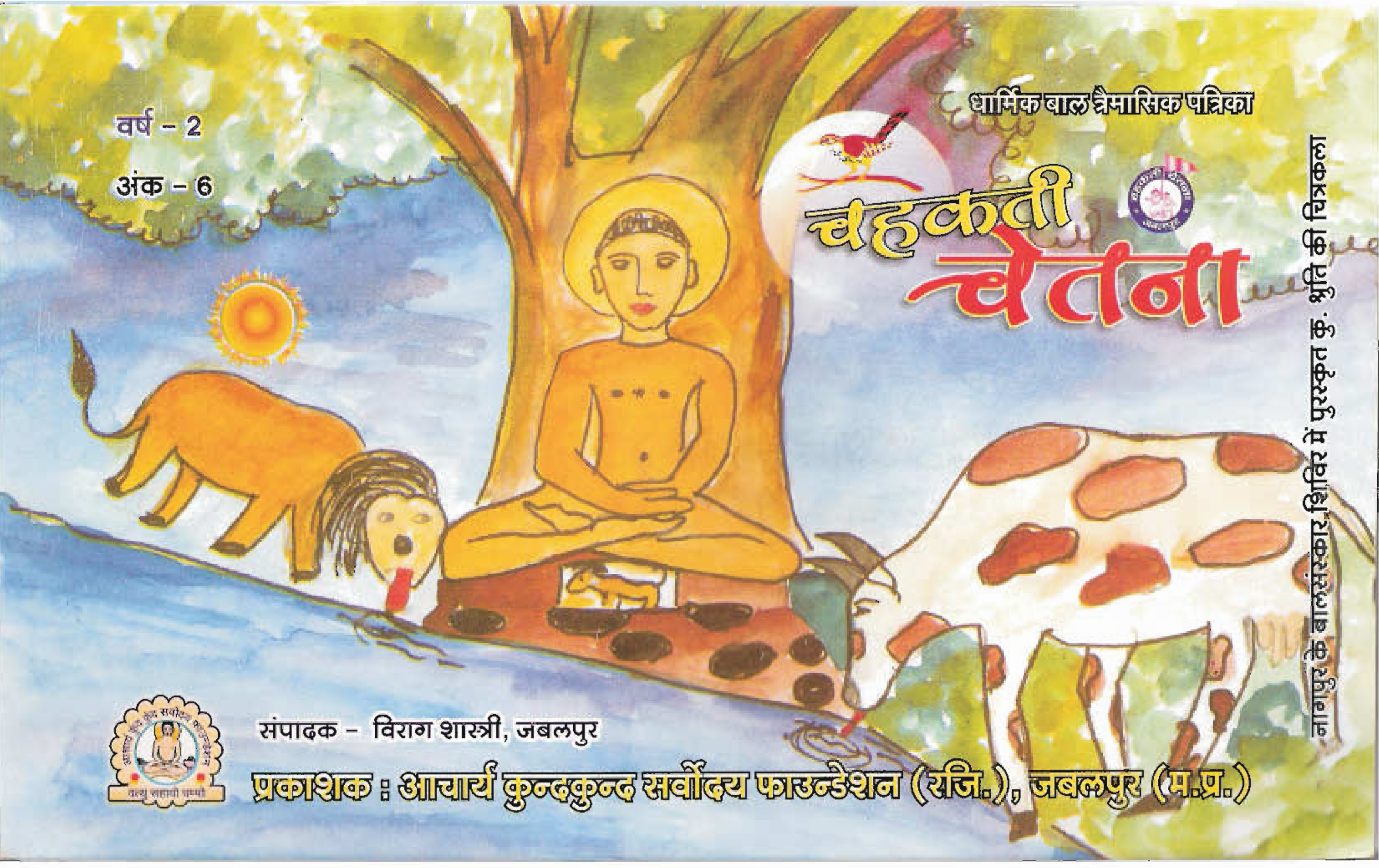

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष - 2

अंक - 6

चहकती चेतना

नागपुर के बालसंस्कार शिविर में पुरस्कृत कु. श्रुति की चित्रकला

संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन (रजि.), जबलपुर (म.प्र.)

हमारे आराध्य नवदेव

इस स्तंभ के अंतर्गत
नव देवताओं के परिचय क्रम में
जिनवाणी का स्वरुप पढ़ चुके हैं।
इस अंक में पढ़िये

अरिहंत

सिद्ध

आचार्य

उपाध्याय

साधु

जिनबिम्ब

जिनधर्म

जिनवाणी

जिनालय

पंचकल्याणक पूर्वक मंत्रों से प्रतिष्ठित जिन प्रतिमायें जहाँ पर विराजमान होती हैं उसे जिन मंदिर अथवा जिनालय कहते हैं। जिन मंदिरों के शिखर होते हैं उसे जिनमंदिर कहते हैं और जिन मंदिरों के शिखर नहीं होते उन्हें जिन चैत्यालय कहते हैं। ये दोनों ही पूज्य हैं। हमें जिन मंदिर का सम्मान और विनय करना चाहिये और प्रतिदिन जिन मंदिर जाना चाहिए।

कविता

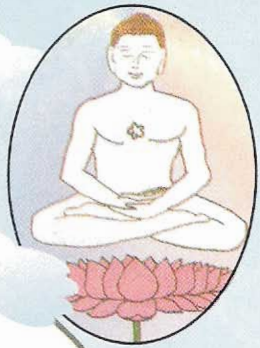

चलो सैर करेंगे
अपने मोक्ष महल की
चलो सैर करेंगे।

जीव राजा आगे आओ,
श्रद्धा ज्ञान के डिब्बे लाओ।
प्रभु अरहंत हैं गार्ड हमारे, अब न रुकेगी गाड़ी....
चलो सैर करेंगे ....

चारित्र की झंडी मिली,
कर्मों की फिर धूल उड़ी
मुनिराज ने मार्ग बताया सरपट दौड़े गाड़ी....
चलो सैर करेंगे......

मोक्षपुरी की रेल है,
यह संसार तो जेल है
सम्यग्दर्शन टिकिट कटा लो, कहती हमसे गाड़ी....
चलो सैर करेंगे.........

– *विराग शास्त्री*

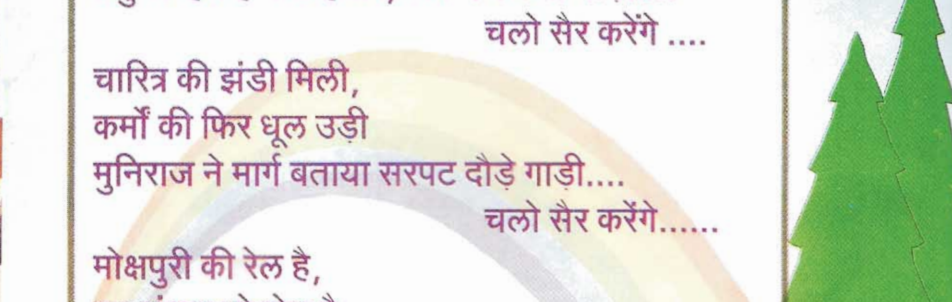

प्रेरक प्रसंग

पं.गोपालदास बरैया अपने जीवन में पूर्ण ईमानदार रहे। एक बार उनकी पत्नी ने विद्यालय में काम करने वाले बढ़ई से अपने बच्चो के लिये लकड़ी का एक खिलौना बनवा लिया। जब गोपालदासजी को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने तत्काल लकड़ी का मूल्य और बढ़ई की मजदूरी के 5 पैसे विद्यालय में जमा करवा दिये। एक सेठ ने कहा कि आप छोटी सी बात का इतना विचार क्यों करते हैं। तब पण्डित जी ने उत्तर दिया – जो तिल की चोरी कर सकता है वह हीरे की चोरी भी कर सकता है।

संकलन–आदेश जैन
देवलाली

जीव-अजीव

मैं कौन हूँ ?	मैं जीव हूँ।
मुझमें क्या है?	मुझमें ज्ञान है।
मैं ज्ञान से क्या करता हूँ?	मैं ज्ञान से जानता हूँ।
जीव कितने होते होते हैं?	जीव अनन्त होते हैं।
घड़ी क्या है?	घड़ी अजीव है। अजीव में ज्ञान नहीं होता है।
कम्प्यूटर क्या है?	कम्प्यूटर अजीव है।
पंखा क्या है?	पंखा अजीव है।
लेकिन कम्प्यूटर से ज्ञान तो होता है।	नहीं! ज्ञान तो अपनी आत्मा से होता है। कम्प्यूटर में ज्ञान नहीं होता।

दो दृष्टि

दानव

मानव

दानव	मानव
तुम्हारे लड़के ने गेंद मारकर मेरे कपड़े खराब कर दिये। एक दिन मैं उसे बहुत मारूँगा।	आप इतने दुःखी क्यों हो रहे हैं, यदि बच्चे ने मेरे कपडे खराब कर दिये तो क्या हुआ? यदि मेरा बच्चा खराब कर देता तो! हमें अपने बच्चो को प्यार से समझाना चाहिये।
क्या तुम अंधे हो? तुम्हें दिखता नहीं, मुझे धक्का दे दिया।	कोई बात नहीं, धोखे में आपका धक्का लग भी गया तो क्या हुआ?
तुमने मेरा ग्राहक क्यों बुला लिया, एक दिन वो मजा चखाउँगा कि सब दुकानदारी भूल जाओगे।	यदि आपके यहाँ से हमारे ग्राहक ने सामान ले लिया तो क्या हुआ? सब का अपना-अपना पाप-पुण्य का उदय होता है।
मेरे हिस्से में छोटा मकान और आपने बड़ा मकान ले लिया। मैं पूरे मकान में आग लगा दूँगा।	भाई साहब! आपको जो चाहिये वह आप ले लें। मैं तो बंटवारा ही पाप ही समझता हूँ और पुण्य के उदय से भिखारी भी करोड़पति बन जाता है और पाप के उदय से करोड़पति भी भिखारी।
मैं तो विद्वान हूँ। अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया है। तुम्हें क्या पता है मूर्ख!	अरे भाई! दो चार शास्त्रों का ज्ञान हो गया तो कौन सी बड़ी बात है। ये कार्य तो कई बार किया परंतु आत्मा की विशुद्धि बढ़े तो कोई बात है।

-निशंक जैन
सिंगोड़ी (म.प्र.)

आचार्य मानतुंग महान तपस्वी और विद्वान मुनिराज थे। एक बार विहार करते हुये वे राजा भोज की राजधानी धारा नगरी में आये और नगर के पास एकांत स्थान में ठहर गये। नगरवासी उनके दर्शन करने गये और उनका उपदेश सुनकर बहुत प्रभावित हुये। आचार्य मानतुंग के आगमन का समाचार सुनकर राजा भोज भी अपने राज्य के मंत्रियों के साथ दर्शन के लिये गये। प्रसिद्ध कवि कालिदास भी उनके साथ थे। उन्होंने ईर्ष्या के कारण मुनिराज को परेशान करने के उद्देश्य से शास्त्रार्थ प्रारंभ कर दिया। आचार्य ने उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया। कवि कालिदास को अपना अपमान लगा। प्रातः होते ही उसने राजा से कहा आप उन जैन मुनि को राजसभा में आमंत्रण दें, मैं उनसे शास्त्रार्थ करूँगा। राजा ने उसकी बात मानकर एक सिपाही को मुनि मानतुंग को बुलाने भेजा। मानतुंग आचार्य ने कहा - मुझे राजभवन से क्या प्रयोजन? राजा को कोई कार्य हो तो यहीं आकर पूछ लें। सिपाही ने जाकर यह समाचार राजा को सुनाया। मुनिराज का उत्तर सुनकर कालिदास ने राजा को कहा कि महाराज! वह साधु तो बहुत अभिमानी है

रखा है। देखिये! उसने आपका अपमान किया है। राजा को अभिमान जाग गया। वे क्रोधित होकर बोले- जैन मुनि को जबरदस्ती उठाकर ले आओ। राज्य के कर्मचारियों ने वैसा ही किया। मुनिराज ने अपने उपर उपसर्ग जानकर मौन धारण कर लिया और सामायिक में लीन हो गये। राजा ने आज्ञा दी कि हमारे विद्वान से शास्त्रार्थ कीजिये अन्यथा आपको कारावास का दण्ड दिया जायेगा।

जब मुनि मानतुंग ने राजा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया तो राजा को और अधिक क्रोध आ गया। मुनि को चुपचाप बैठा देखकर राजा ने हथकड़ी पहिनाकर कारावास के 48 कमरों के अंदर बन्द करने की आज्ञा दी। सैनिकों ने मुनि मानतुंग को कारावास मे डाल दिया।

अपने ऊपर उपसर्ग जानकर मुनिराज ने भगवान आदिनाथ की स्तुति करने के लिये भक्तामर काव्य की रचना की। उसके काव्य पढते ही 48 कमरों के 48 ताले टूट गये। पहरेदार यह देखकर दंग रह गया। उसने इस चमत्कार की सूचना राजा को दी। राजा ने कारावास में जाकर यह चमत्कार स्वयं देखा तब उसे मुनिराज का महत्व और अपनी भूल का अहसास हुआ। राजा ने मुनिराज के चरणों में गिरकर अपने अपराध की क्षमा मांगी। आचार्य मानतुंग ने क्षमाभाव से उसे धर्म वृद्धि का आशीर्वाद दिया।

इस ऐतिहासिक कहानी से हमें यह संदेश मिलता है कि संकट के समय में अपना साहस नहीं खोना चाहिये और धर्म को हर समय याद रखना चाहिये।

-जागेश जैन
जबेरा

क्रोध महा शैतान है, खाता सारा ज्ञान है
क्रोध शांति का दुश्मन है' रखता घर में अनबन है
क्रोध बढ़े तब चुप्प रहो, अपने में ही गुप्प रहो।

अहिंसा व्रत

(पिछले अंक प्रकाशित अहिंसा व्रत की कहानी का शेष भाग)

आपने पिछले अंक में पढ़ा कि राजा महाबल की आज्ञा थी अष्टाह्निका महापर्व में राज्य में किसी भी प्रकार का जीवघात नहीं किया जायेगा। राजा की इस आज्ञा का न मानकर उनके ही पुत्र बलकुमार ने भेड़ को मारकर खा लिया और सैनिकों द्वारा पकड़े जाने पर राजा द्वारा उसे मत्यु दण्ड दिया गया। बल कुमार को मारने के लिये सैनिक चाण्डाल को बुलाने गये। चाण्डाल का पर्व के दिनों किसी का वध न करने का नियम था। उसने पत्नी को सैनिकों से बहाना बनाने के लिये कहा परंतु धन के लोभ में पत्नी ने संकेत करके बता दिया कि चाण्डाल अंदर छिपा है। सैनिक तुरंत अन्दर प्रवेश कर चाण्डाल को पकड़कर राजा के पास ले गये।

चाण्डाल ने राजा से कहा महाराज ! मेरा पर्व के दिनों में वध न करने का नियम है। मैंने एक दिगम्बर मुनिराज से यह नियम लिया था। राजा ने सोचा जरूर यह चाण्डाल और मेरा पुत्र दोनों आपस में मिले हुये हैं। चाण्डाल नियम कैसे ले सकता है? और चाण्डाल की इतनी हिम्मत कि वह मेरे आदेश को न माने। उसने क्रोध में आदेश दिया कि दोनों को रस्सी से बांधकर नदी में फिकवा दो वहाँ के मगरमच्छ दोनों को खा जायेंगे। राजा के आदेश के अनुसार दोनों को रस्सी से बांधकर नदी में फिंकवा दिया गया। पर ये क्या ? ये तो चमत्कार हो गया। राजा के पुत्र बल कुमार को तुरन्त मगरमच्छ खाने लगे और चाण्डाल को देवों ने ऊपर उठा लिया और पुष्पों की वर्षा करने लगे। सारे नगर में इस चमत्कार की चर्चा होने लगी। राजा ने जब समाचार सुना वह स्वयं देखने के लिये आया और इस अतिशय को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने चाण्डाल से क्षमा मांगी और सारे नगरवासी अंहिसा महाव्रत की जयकार करने लगे।

ज्ञान पहेली

दिमाग लगाओ - पुरस्कार पाओ

नीचे दी गई पहेलियों का उत्तर लिखकर भेजिये। सही पांच विजेताओं को पुरस्कार दिये जायेंगे। पांच से अधिक सही उत्तर प्राप्त होने पर पांच विजेताओं का चयन ड्रा द्वारा किया जायेगा। इन पहेलियों के उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 31 जुलाई है।

1
बैठे रहते रहते करें न काम, हमें न दिखता उनका धाम।
उनके पास वही जाते हैं, जो उन सम बन जाते हैं॥

2
ओढ़ गगन चादरा, पृथ्वी पर आराम।
करते निजगृह वास नित, करे न घर का काम॥

3
एक बरस भोजन नहीं पाया, फिर भी सुख से रहते थे।
भले ही तन को छोड दिया हो, वे तो कभी न मरते थे॥

4
जैन धर्म महान है जाना, दे दी अपनी जान।
एक ने धर्म प्रचार किया, एक का अमर बलिदान॥

5
तीन बार वनवास है पाया, तो भी मन को हिला न पाया।
जैन धर्म की शान है वो, नारी शक्ति की पहिचान है वो॥

पिछले अंक में प्रकाशित ज्ञान पहेली के उत्तर व विजेताओं के नाम–

1. वीतराग विज्ञानता 2. पंच परमेष्ठी 3. दिव्यध्वनि 4. जिनवाणी माता 5. 24 तीर्थंकर

विजेता– 1. प्रशम दोशी 2. नितिन जैन, नांगलराया दिल्ली

पुरस्कार प्रायोजक

अनेकांत फार्मेसी

डॉ.योगेश चंद जैन

अलीगंज, जिला – एटा (उ.प्र.)

अंजन बना निरंजन

सम्यग्दर्शन के आठ अंग होते हैं। प्रस्तुत है आठ अंग में प्रथम अंग निःशंकित अंग की प्रसिद्ध कथा।

भारतवर्ष के मगध देश के अंतर्गत राजगृह नामक नगर में एक जिनदत्त सेठ रहता था। वह जिनशासन से प्रेम करने वाला था। एक चतुर्दशी की आधी रात को शमशान में तपस्या कर रहा था, तभी वहाँ अमितप्रभ और विद्युत्प्रभ नाम को दो देव आये। अमितप्रभ जैन धर्म को मानने वाला और विद्युत्प्रभ अन्य धर्म को मानने वाला था। दोनों ने एक दूसरे के धर्म को मानने वालों की परीक्षा लेने का निर्णय किया। एक साधु जो अग्नि हवन करके ध्यान करके बैठा था उस पर जब देव ने उपसर्ग किया तो वह उठकर भाग गया। तब अमितप्रभ ने कहा कि मित्र! जैन धर्म ही सर्वोत्कृष्ट है। जैन मुनि तो उत्कृष्ट होते ही हैं पर श्रावक भी उत्कृष्ट होते हैं, तुम सामने खड़े श्रावक की परीक्षा ले सकते हो। तब विद्युत्प्रभ ने जिनदत्त पर बहुत उपसर्ग किये परंतु पर्वत की तरह खड़ा रहा। जब सुबह हुई तो देवों ने प्रसन्न होकर उसे आकाशगामिनी विद्या दी और कहा कि णमोकार मंत्र और सही विधि के दारा तुम यह विद्या दूसरों को प्रदान कर सकोगे।

आकाशगामिनी विद्या पाकर वह उड़ते हुये जिन तीर्थों की वंदना करने लगा। पड़ोसी सोमदत्त के पूछने पर उसने सारी घटना विस्तार से बतला दी। सोमदत्त की भावना भी आकाशगामिनी विद्या प्राप्त करने की हुई। सोमदत्त सारी विधि पूछकर चतुर्दशी की रात्रि में शमशान में एक पेड़ पर 108 रस्सी वाला आसन बांधा और

नीचे तीखी नोंक वाले शस्त्र नीचे जमीन पर लगाये । उसे णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुये क्रम से 108 रस्सी काटना था । परंतु वह बहुत घबड़ा रहा था कि यदि जिनदत्त की बात झूठ हो गई तो मैं तो व्यर्थ मैं मारा जाऊँगा । वह बार -बार आसन पर चढ़ता उतरता रहा परंतु वह रस्सियाँ नहीं काट पाया ।

तभी उसी समय अंजन का नाम एक चोर सैनिकों के डर से भागकर वहाँ आया। यह अंजन चोर मणिकांजन नाम की वेश्या से प्रेम करता था। एक बार जब उस वेश्या ने राजा प्रजापाल की महारानी कनकवती का रत्नों का हार मांगा । अंजन उसकी इच्छा पूरी करने के लिये राजमहल में चोरी करने पहुँचा और जब वह बहुमूल्य हार चोरी कर राजमहल से बाहर निकल रहा था तो सैनिकों को वह चमकता हुआ हार दिख गया और वे उसके पीछे भागे तब अंजन चोर शमशान पहुँच गया जहाँ सोमदत्त तपस्या कर रहा था । सोमदत्त को पेड़ पर चढ़ते उतरते देखकर उसने सोमदत्त से पूछा तो सोमदत्त ने पूरी विधि सुना दी । अंजन चोर ने सोचा कि सैनिक मेरी जान के पीछे हैं, यदि मैं पकड़ा गया तो वैसे भी मुझे फांसी दे दी जायेगी । क्यों न एक बार प्रयास करके देखूँ फांसी पर मरने से अच्छा तो ऐसे मरना है। यह सोचकर सोमदत्त से तलवार लेकर स्वयं पेड़ पर चढ़ गया । परंतु णमोकार मंत्र भूल गया । तब उसने ध्यान लगाकर कहा जैसा सेठजी ने वह वचन प्रमाण है । 'आणं ताणं कछु न जाणं, सेठ वचन परमाणं' कहकर श्रद्धापूर्वक सारी रस्सियाँ एक बार में काट दीं । रस्सियों के कटते ही उसे आकाशगामिनी विद्या सिद्ध हो गई।

अंजन ने भी अकृत्रिम जिनालयों की वन्दना की और जिनदत्त के उपदेश से प्रभावित होकर मुनिराज के पास जाकर दिगम्बर दीक्षा ले ली। अंजन मुनिराज विहार करते हुये कैलाश पर्वत पहुँचे और तप पूर्वक समस्त कर्मों का नाश कर सिद्ध परम पद को प्राप्त किया ।

- आशीष शास्त्री, टीकमगढ़

कविता

बुरी आदतों मे मत पड़ना, बिगड़ों की संगत न करना।
गंदी पुस्तक कभी न पढ़ना, गलत राह पर कभी न बढ़ना ॥
खोटी फिल्मों से तुम डरना, कोई धोखाधड़ी न करना ।
खराब खेलों से तुम डरना, गंदी हंसी मजाक न करना ॥
जीव जन्तुओं को नहीं कुचलना, भोले लोगों को मत छलना ।
दुर्बल को तंग मत करना, झगड़े-गाली कभी न करना ॥
यहाँ-वहाँ मत कचरा करना, बिजली जल बरबाद न करना ।
कपड़ों को मैला मत करना,कभी फालतू शोर न करना ॥
कभी किसी नकल मत करना, सदा बड़ों की सेवा करना ।
मैला हो जीवन का झरना, ऐसी शैतानी मत करना ॥
जिन मंदिर तुम रोज ही जाना, जिनवाणी की रक्षा करना ।
सदा आचरण अच्छा रखना, अच्छे बच्चे तब कहलाना ॥

–साभार संस्कारोदय

मंदिर जाते समय हमारे साथ ये वस्तुयें होनी चाहिए

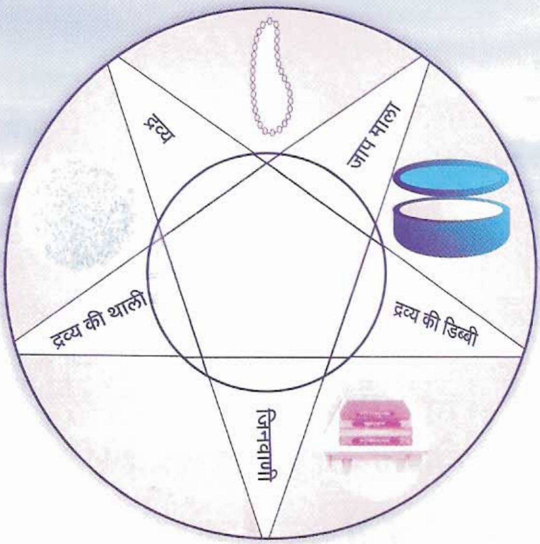

हमारे साथ ये वस्तुयें नहीं होनी चाहिए

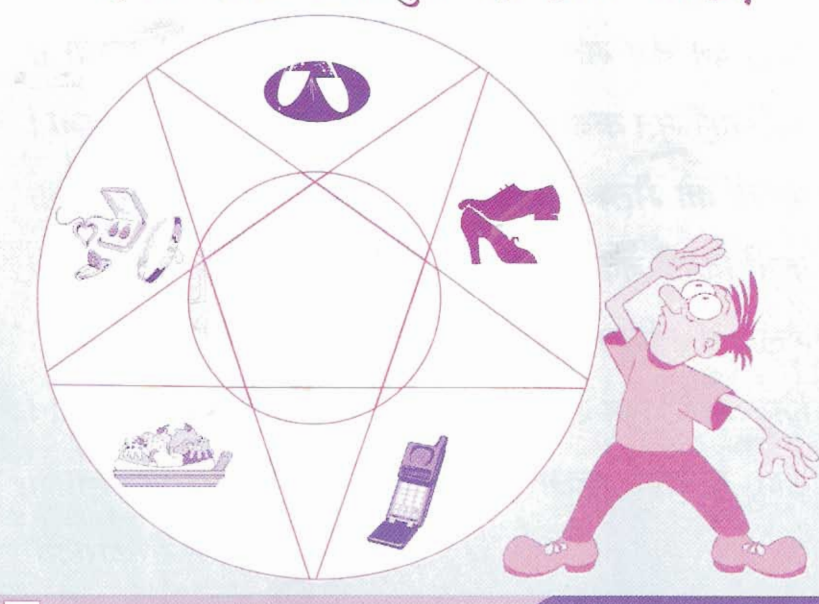

सही जोड़ी बनाइये

भगवान महावीर स्वामी

मुनि सुव्रतनाथ

भगवान नमिनाथ

भगवान नेमिनाथ

भगवान मल्लिनाथ

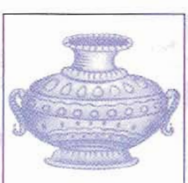

भगवान पार्श्वनाथ

24 तीर्थंकर वाली पहेली

नीचे लिखे वाक्यों में वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में से 12 तीर्थंकरों के नाम अथवा उनके चिन्हों के संकेत हैं, आपको उन संकेतों को पहचानकर तीर्थंकरों के नाम लिखना है।

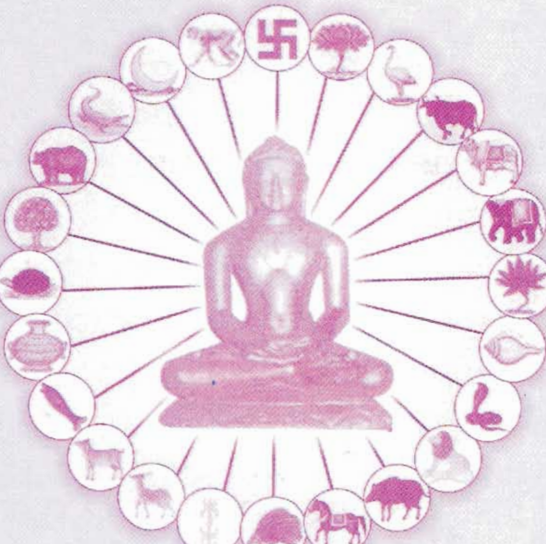

1. गर्मी की दोपहरी में पेड़ की छाया यात्री को छाया प्रदान करती है–
2. माह में जो धीरे–धीरे घटता है–
3. बुद्धि जिनकी अच्छी हो
4. सूरज की किरणों के साथ प्रफुल्लित होने वाला
5. जिसे कोई हरा नहीं सकता
6. हार एवं फूलों से स्वागत
7. अमूल्य पत्थर जो वर्तमान में काल्पनिक है
8. न जिसकी बहुत जरुरत है
9. दृढ संकल्प एवं मजबूत इरादों से हर कठिन कार्य हो जाता है
10. इसके बिना आत्मा की मुक्ति अंसभव है
11. तेरहपंथ और बीस पंथ आम्नायियों के बीच एक विवादास्पद अष्ट द्रव्य में एक द्रव्य
12. जिसमें अपार शक्ति है

कहानी

अद्भुत बालक

दक्षिण के अर्काट जिले के जिंजी प्रदेश का वेंकटामयेदुई नाम का राजा था। राजा का जन्म कबरई नाम निम्न जाति में हुआ था। उसने उच्च कुलीन कन्या से विवाह करने का निश्चय किया। अपनी यह इच्छा पूरी करने के लिये वह पागल सा हो गया। उसने अपने राज्य के समस्त जैन परिवारों के मुखियाओं को बुलाकर एक जैन कन्या की मांग की। इस मांग को सुनकर जैनी आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने अपनी गुप्त मीटिंग की। उन्होंने सोचा कि राजा को हमसे हमारी कन्या मांगने साहस का कैसे हुआ ? इस नीच राजा को इसकी सजा मिलना चाहिये। उन्होंने अपनी कन्या राजा को देने की स्वीकृति दे दी।

विवाह की तिथि आने पर राजा बारात लेकर पहुँचा किन्तु विवाह स्थल पर एक भी व्यक्ति नहीं था। वहाँ पर एक कुतिया बंधी थी। जिसके गले में एक कागज बंधा था जिस पर लिखा 'राजन! आपके साथ विवाह करने के लिये कोई भी जैन कन्या तैयार नहीं हुई। अतः आप इस कुतिया से विवाह कर लीजिये।

यह पढ़कर राजा क्रोध में आ गया और राज्य के समस्त जैनियों को मार डालने की आज्ञा दे दी। पूरे राज्य में जैनियों की हत्यायें होने लगीं। जिन जैनियों ने धर्म परिवर्तन कर लिया उन्हें

छोड़ दिया गया। जैनियों की पहचान वाले चिन्ह जिनदर्शन, छने हुये जल और रात्रि भोजन त्याग पर पांबदी लगा दी गई।

इन्हीं दिनों एक जैन बालक बैलूर के पास एक नदी के किनारे पानी छान कर पी रहा था। राजा के सिपाहियों ने उसे देखा और उसे पकड़ कर राजा के पास ले गये। राजा ने उस दिन पुत्र जन्म की खुशी में फांसी का आदेश न देकर दुबारा पानी छानकर न पीने की चेतावनी देकर छोड़ दिया।

जैन समाज पर यह घोर अन्याय देखकर उस बालक ने सोचा- मैं जैन धर्म का इतना प्रचार करूँगा कि जिससे जैन धर्म का अपमान समाप्त हो जाये। उसने श्रवणबेलगोला में मुनि दीक्षा लेकर अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया और संपूर्ण दक्षिण भारत में जैन धर्म का जोरदार प्रचार किया। इनका नाम मुनि वीरसेन था। अपनी प्रतिभा के बल पर वे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये गये। इन्होंने नियम लिया कि वे प्रतिदिन 100 व्यक्तियों को जैन बनाकर आहार ग्रहण करेंगे। धर्मशून्य दक्षिण भारत में धर्म की जयजयकार होने लगी। अनेक अन्य धर्मी राजाओं ने भी आचार्य वीरसेन से जिनधर्म की दीक्षा ले ली।

संकलन - स्वस्ति जैन, जबलपुर

जानने योग्य बातें -

निःशुल्कप्राप्त करें- श्रीमति नीलम जैन धर्मपत्नी पं. खेमचंद जैन शास्त्री ने टोडरमल स्मारक द्वारा प्रकाशित बालबोध पाठमालाओं के प्रश्नोत्तरी भाग 1,2,3 का लेखन किया गया है। इसमें बालबोध भागों की संपूर्ण विषय वस्तु को प्रश्न उत्तर के रुप में प्रस्तुत किया गया है। जिन्हें भी आवश्यकता हो वे निम्न पते पर 10 रु. की डाक टिकिट भेजकर तीनों प्रश्नोत्तर पुस्तक प्राप्त कर सकते हैं। पता- श्री खेमचंद जैन, 578, हिरण मगरी, सेक्टर नं. 13, महावीर विद्या मंदिर के सामने, उदयपुर राज. 313001 मो. 9414711038

निर्वाचित- अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद की राष्ट्रीय बैठक में श्री बलवंतराय जैन, भिलाई को पुनः परिषद का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

हमारे तीर्थ क्षेत्र-

सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरि

सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरि मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित है। मध्यप्रदेश के बैतूल जिले की भैंसदेही तहसील में स्थित सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि से तीन करोड़ पचास लाख दिगम्बर मुनिराजों ने निर्वाण पद की प्राप्ति की। यहाँ दसवें तीर्थंकर भगवान शीतलनाथ का समवशरण आया था। पर्वत पर 52 जिन मंदिर हैं जिनमें से अधिकांश अति प्राचीन और 16 वीं शताब्दी के हैं। 40 नंबर जिनमंदिर के समीप ही 250 फुट ऊँचाई से पानी की धारा गिरती है। जिससे सुन्दर झरना बन गया है। पर्वत पर लगभग 600 सीढ़ियाँ हैं। नीचे भी अनेक भव्य रमणीय जिनमंदिर हैं। आवास के लिये समुचित व्यवस्थायुक्त धर्मशाला है।

यह सिद्ध क्षेत्र महाराष्ट्र के अमरावती जिले अचलपुर तथा परतवाड़ा नगर से मात्र 7 किमी, अमरावती से 65 किमी, बैतूल से 100 किमी, भोपाल से 240 किमी, आकोट से 75 किमी की दूरी पर स्थित है।

इनमें से हमारे वीतरागी देव कौन से हैं ?

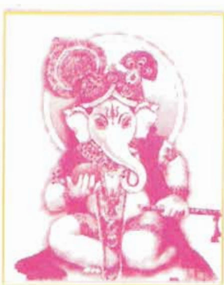

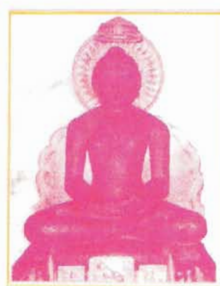

भाग-2 (बाल काव्य नाटिका)

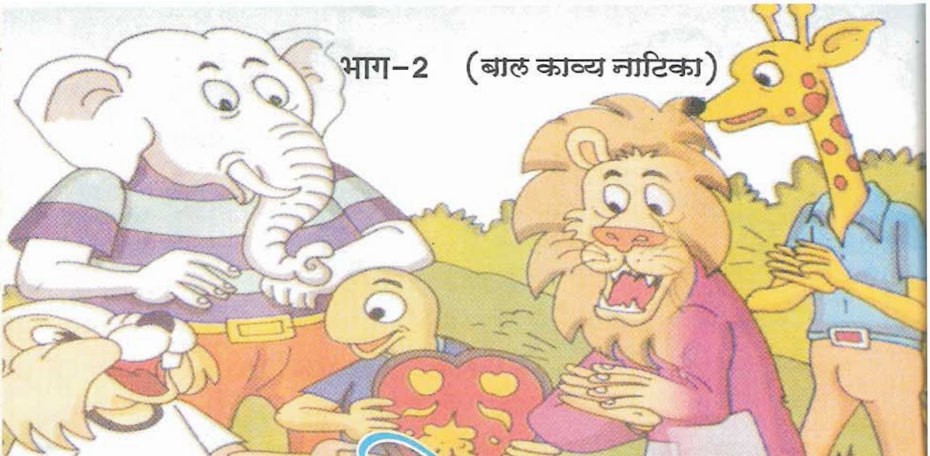

सन्मति वन

लेखिका - श्रीमती रुचि 'अनेकांत' नई दिल्ली

पिछले अंक से आगे

(सभी जानवर भाग जाते हैं मात्र शेर रह जाता है शिकारी दौड़ते हुये आता है)

शिकारी - हा - हा - हा अभी सुन रहा था कुछ, जानवरों की आवाज निराली (क्रोधपूर्वक) कहां भाग गये सब, अब आयी उनपर विपदा भारी। थोड़ी सी बाकी अब आस इच्छा हो रही है खाऊँ हिरनी माँस॥

शेर - (दहाड़कर अचानक) भाग जाओ यहां से ऐ दुष्ट प्राणी, नहीं मिल सकता तुझे बूँद भर भी पानी। मैं शेर हूँ इस जंगल का राजा, शिकार करोगे तो दूँगा सजा॥ अरे ..... सिर्फ जीभ के स्वाद के लिये क्यों मांस खाते हो, इन निर्दोष प्राणियों को अपना शिकार बनाते हो ?

शिकारी - (खलनायकी स्वर में) देख मेरे सामने से हट जा मेरे हाथों में बंदूक है। तू बेमौत मारा जायेगा, मेरा निशाना अचूक है॥

शेर - तू भी सुन ले। जब तक इस देह में जान हैं उजाड़ नहीं सकता तू वन का दुश्मन है (दहाड़कर शिकारी के ऊपर कूदता है किंतु कमर से छुरा निकालकर शेर की जांघों में एक दर्दनाक वार करता है शेर घायल हो जाता है और शिकारी बंदूक उठाकर भागते हुये कहता है।)

शिकारी - घबड़ाओ मत मैं अवश्य आऊँगा जानवरों को मैं अवश्य खाउंगा

शेर - (चिल्लाकर) आह ------ ऐ दुष्ट प्राणी तुझे क्या मिला -

बंदर - (चिल्लाकर) राजा जी ... राजाजी (साथ में)

हिरनी - अरे राजा जी की आवाज। दौड़ो .... (सभी का प्रवेश)

खरगोश - अरे-अरे, देखो-देखो राजाजी को खून बह रहा है।

कोयल - लगता है उस दुष्ट मानव ने ही राजाजी को मारा है।

हिरनी - जल्दी करो राजाजी के घाव को बांध दो।

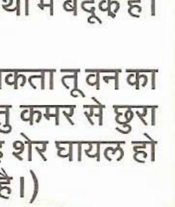

(थोड़ी देर बाद लोमड़ी का प्रवेश)

लोमड़ी – राजा जी की जय हो ....2.....
शेर – (आह भरते हुये) कहो क्या बात है लोमड़ी ?
लोमड़ी – राजन! एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती हे। एक कुत्ते ने अपराध किया है, महाराज न्याय चाहिये।
खरगोश – लेकिन राजाजी की हालत ठीक नहीं है। वे अस्वस्थ हैं।
शेर – नहीं खरगोश प्रजा के लिये मेरा दरबार हमेशा खुला है। दरबार लगाया जाये। (दरबार लगता है राजा जी सिंहासन पर बैठे हैं, कुत्ते को पेश किया जाता है।)
शेर – इसने क्या अपराध किया है ?
लोमड़ी – महाराज ! इसने घोर अपराध किया है। सन्मति वन की शासन को कलंकित किया है। महाराज ! इसने चोरों द्वारा दिये गये बिस्कुटों के लोभ में आकर अपने मालिक के घर में चोरी करवा दी, इसे कठोर दंड मिलना चाहिये।
शेर – (कुत्ते से) – क्या यह सब सत्य है ?
कुत्ता – मुझे माफ कर दीजिये राजा जी ---- (गिड़गिड़ाते हुये)
शेर – (क्रोधपूर्वक) नहीं –। ऐ दुष्ट! तूने ऐसा अपराध किया है जिससे सन्मति वन को ही नहीं बल्कि अपनी कुत्ता जाति को भी कलंकित किया है, तुझमें आदमी के गुण आ गये हैं, तुझे कुत्तों की बिरादरी से बाहर किया जाता है।

(सिपाही कुत्ते को ले जाते हैं) थोड़ी देर बाद ....

शेर – लोमड़ी !
लोमड़ी – जी, महाराज !
शेर – आज कहां गये हैं हाथी दादा, क्यों रहते वे अपनाकर जीवन सादा। उन बुजुर्ग से हमें सलाह लेनी हैं शिकारी की हरकतें उनसे कहनी है॥
लोमड़ी – लीजिये वे आ भी गये।
हाथी – (झुककर) राजा जी की जय हो।
राजा – आओ आओ हाथी दादा, तुम ज्ञानी हम सबसे ज्यादा।
हम सभी को तुम राय बताओ, दुष्ट शिकारी का उपाय बताओ॥
हाथी – घटनायें मैंने भी सुनी हैं सारी, सन्मति वन पर आयी है विपदा भारी
राजा – क्या किया जाये अब बताओ, तुम सभी मिलकर एक तरकीब सुझाओ
बंदर – (क्रोध तथा आवेशपूर्ण स्वर में) हम उसे जिंदा नहीं छोड़ेंगे महाराज।
हाथी दादा – बेवकूफ न बनो बंदर, रहना सीखो सीमा के अंदर। हम सभी को थोड़ा इंतजार करना है, पहले सरलता से उसे समझाना है।
राजा – हाँ ! यही ठीक रहेगा। कल सुबह हम सभी उससे एक साथ मिलेंगे। (सभी चले जाते हैं किंतु खरगोश पुनः लौट आता है) शेष पृष्ठ 33-34 पर

Is Your Mithai Non-Vegetarian ?

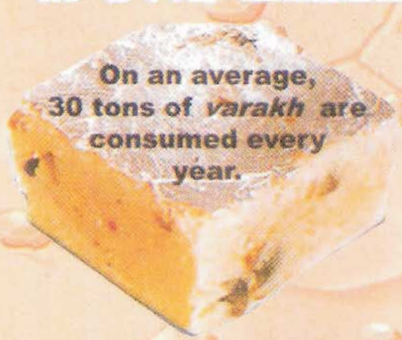

"Sheep have soft and warm skin.... ideal for beating varkh."
- Varkh Manufacturer

The Beating of Silver between tissues of Slaughtered Animals : the most closely guarded secret of the Varakh industry

THE 6 TYPES OF PROCESSING OF CHANDI VARKH

1

Skins of slaughtered goat and sheep... soaked for dehairing in filthy, infested vats for 12 to 13 days.

2

Worker peels away the epidermal layer from the sking in a single piece.

3

The animal tissue layers, treated in a decoction of about 70-80 herbs for 30 minutes to deodorise, soften, and 'warm' them, are then coloured and left to dry on wooden boards.

4

workers cuts out square pieces measuring 19 cm x 15 cm from the treated animal tissue. Pouches are made from these pieces and are stacked into booklets. Booklets are given covers of goat/lamb suede.

5

Thin strips of drawn silver are placed inside the pouches.

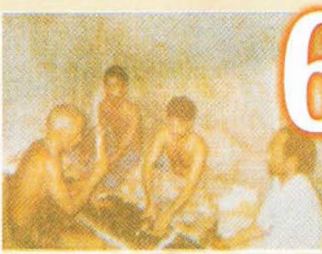

6

Workers pound away at the pouches with wooden mallets for 3 hours to beat the silver inside into the ultra -thin 'varakh' of thickness as low as a fraction of a micron.

There is always the possibility of some of the animals tissue remaining on the surface of the silver foil.

चांदी का वर्क मांसाहार है ?

साथियो ! आपको बाजार की मिठाई बहुत अच्छी लगती होंगी और वे मिठाईयाँ तो आपको बहुत पसंद होंगी जिन पर सफेद परत लगी होती है उस सफेद परत को चांदी का वर्क कहते हैं। वैसे तो बाजार की मिठाइयाँ खाना ही नहीं चाहिये वे तो अभक्ष्य हैं ही लेकिन यदि बाजार की मिठाईयाँ आप खाते भी हैं तो चांदी के वर्क लगी मिठाईयाँ बिलकुल भी नहीं खाना चाहिये । आप सोच रहे होंगे क्यों ? क्या आपको मालूम नहीं वो तो मांसाहार ही है। वो कैसे ?तो सुनिये चांदी के वर्क बनने की कहानी –

वर्क बनाने वाले निर्माता कत्लखानों (जहाँ पर पशु काटे जाते हैं) में जाते हैं और वहाँ उन पशुओं का चयन करते हैं जिनकी चमड़ी मुलायम होती है। इसके बाद उन पशुओं की हत्या कर उनकी चमड़ी निकाली जाती है। उस चमड़ी की गंदगी साफ करने के लिये 12 दिनों तक उसे पानी में डुबाये रखा जाता है। इसके बाद मजदूर उस चमड़ी (खाल) को छीलते हैं जिसे वे 'झिल्ली' कहकर पुकारते हैं। अलग-अलग परत निकालने के बाद उसे आधा घंटे तक पानी में उबाला जाता है और इसके बाद उसे सूखने के लिये लकड़ी के तख्त पर डाल दिया जाता है। एक बार सूख जाने के बाद मजदूर उसे 19 X 15 के टुकड़ों में काट लेते हैं। इन्हीं टुकड़ों से थैली बनाते हैं जिसे वे 'औजार' कहते हैं। इसके अंदर चांदी की बारीक पत्तियों को रखा जाता है। इन पत्तियों

को 'अलगा' कहते हैं। चमड़े के औजार में चांदी की पत्तियों को रखकर ढेर लगाया जाता है। इसके पश्चात् इस ढेर को एक बड़े चमड़े के थैले में भरा जाता है। फिर कारीगर उसे लगभग 3 घंटे तक लकड़ी के हथौड़े से पीटते हैं। जिससे सोने व चांदी के वर्क तैयार होता है। इसका उत्पादन मुख्य रुप से बिहार के भागलपुर, पटना और मुजफ्फरपुर उत्तरप्रदेश के कानपुर, मेरठ, वाराणसी के साथ मुम्बई, जयपुर, अहमदाबाद में किया जाता है। दिल्ली, लखनऊ, आगरा और रतलाम के कत्लखानों से वर्क बनाने के लिये पशुओं की नरम खाल से बनीं थैलियाँ भेजीं जाती हैं।

आपको बता दें कि एक पशु की खाल से मात्र 20 से 25 थैली तैयार होती हैं। हर ढेर में 360 थैली होतीं हैं। एक ढेर में लगभग 30 हजार चांदी के टुकड़े बनते हैं। एक किलोग्राम वर्क तैयार करने में 12,500 पशुओं की हत्या की जाती है। हर साल हजारों किलोग्राम चांदी के वर्क की खपत भारत में होती है।

ये कम्पनियाँ और कुछ व्यापारी इसे मशीन से बना हुआ बताते हैं और शाकाहारी समाज और जैन समाज के ही अनेकों लोग इसे बहुत शौक से खाते हैं। पूरी धरती पर वर्क का ऐसा टुकड़ा नहीं है जो मशीन से बना हो।

क्या आप अब भी चांदी के वर्क का प्रयोग करना चाहेंगे? वर्क मांसाहारी खाद्य पदार्थ होने के साथ स्वास्थ्य के लिये हानिहारक भी है। इसके खाने से कोई लाभ भी नहीं है। इंडस्ट्रियल टॉक्सीलॉजी रिसर्च सेन्टर लखनऊ द्वारा वर्क पर किये गये अध्ययन में स्पष्ट रुप से कहा गया है कि चांदी के वर्क में सीसा, क्रोमियम, निकिल और क्रेडनियम जैसी धातुयें मिलीं हुईं हैं। अतः चांदी के वर्क में लपेटी हुई मिठाई, पान, फल आदि अन्य पदार्थों को सेवन मत कीजिये। पता नहीं क्यों मिठाई के व्यापारी चांदी के वर्क वाली मिठाईयों पर रेड लेबल क्यों नहीं लगाते ?

– साभार – मेनका गांधी

अब नहीं बढाऊँगी

– विराग शास्त्री

मिनी ! तुम्हें तो समझाकर मैं थक गई हूँ। लेकिन तुम हो कि मानती ही नहीं। मिनी की माँ ने मिनी को समझाते हुये कहा। तुम इतने बड़े-बड़े नाखून रखती हो, कहीं तुम्हें चोट लग जायेगी तो फिर बैठे रहना रोते हुये। मिनी ने झल्लाते हुये कहा – माँ ! तुम हमेशा मेरे नाखून के पीछे पड़ी रहती हो। आपसे कितनी बार कहा कि ये आजकल का फैशन है और सभी लड़कियाँ नाखून बढ़ाती हैं। लेकिन बेटी ! फैशन में तो कई गंदी बातें भी आ गईं हैं तो वे सब तुम मानोगी। मैं श्रृंगार करने से मना नहीं करती पर ऐसा श्रृंगार भी क्या करना जिससे अपने को और दूसरों को तकलीफ हो। मम्मी ने फिर समझाने का प्रयास किया। मिनी जाते हुये बोली – मम्मी ! आप भी न हमेशा उपदेश देती रहती हो। आप पुराने जमाने की जो हो। मम्मी हमेशा समझाती रहती और मिनी हमेशा लापरवाही से उनकी बात को टाल देती थी।

एक दिन मंदिर में बाल संस्कार शिविर लगा। पधारे हुये युवा विद्वान नाखून के बारे में समझा रहे थे। ''वे बता रहे थे कि नाखून बढाना पाशविक निशानी है। अधिकांश शाकाहारी जानवरों के नाखून नहीं होते और यदि होते भी हैं तो छोटे-छोटे होते हैं। लेकिन मांसाहारी जानवरों को प्रकृति ने बड़े नाखून और पैने दांत दिये हैं जिससे व जंगल में अपने शिकार को फाड़कर खा सकें। हमारी त्वचा के अनिवार्य अंग के रूप में हमें नाखून मिले जब प्राकृतिक रूप से बढ़ जाते हैं हमें उन्हें काट लेना चाहिये। बढ़े हुये नाखून से स्वयं को अथवा दूसरे को चोट लगने का

डर रहता है जिससे इन्फेंक्शन होने खतरा होता है।''

मिनी ने यह सब बातें ध्यान से सुनीं। युवा विद्वान की बातों ने मिनी को सोचने को मजबूर कर दिया। पर समय के साथ मिनी सारी बातें भूल गई। एक दिन वह अपने तीन वर्ष के छोटे भाई मनु को प्यार कर रही थी तभी मनु के शरारत करते समय मिनी के नाखून से मनु का गाल कट गया उसमें खून की लकीर उभर आई। मिनी यह देखकर घबरा गई। सभी ने सामान्य बात समझकर घर की दवा लगाकर मनु का इलाज कर दिया। दो दिन बाद मनु के गाल में इन्फेक्शन हो गया। तुरन्त डॉक्टर को दिखाया और दवा ली। दवा लेने के बावजूद मनु के गाल में घाव बन गया। शहर के बड़े डॉक्टर को दिखाया। मिनी घबरा रही थी। उसे बार-बार अपनी माँ और युवा विद्वान की बातें याद आ रही थीं। काश! उसने मम्मी की बात मान ली होती। अच्छे इलाज से मनु का गाल ठीक तो हो गया परन्तु जीवन भर के लिये उसके गाल पर दाग बन गया। अब मिनी ने जीवन नाखून न बढ़ाने की प्रतिज्ञा ले ली। लेकिन उसे अपने प्यारे भाई के गाल पर दाग देखकर हमेशा दुःख होता था।

बच्चो! मिनी ने तो एक घटना से सबक ले लिया। क्या आपने नियम ले लिया या किसी घटना के घटने का इंतजार कर रहे हैं।

चहकती चेतना का नवीन सदस्यता अभियान

गत अप्रेल और मई माह में चहकती चेतना नवीन सदस्यता अभियान चलाया गया। संस्था के अभिन्न सहयोगी सदस्य पं. आशीष शास्त्री टीकमगढ़ और पत्रिका संपादक श्री विराग शास्त्री के विशेष प्रयासों के फलस्वरुप देवलाली, चिन्तामणि पार्श्वनाथ, नागपुर आदि प्रवास के दौरान लगभग 80 नये सदस्य बने। नवीन सदस्यों का चहकती चेतना परिवार में स्वागत है। नये सदस्यों के नाम पत्रिका में क्रमानुसार प्रकाशित किये जायेंगे।

– प्रबंध संपादक

खरगोश - आह !रात्री आ गयी है ,भूख भी छा गयी है। हरी –हरी घास को खा लूँ,ठंडा–ठंडा पानी पी लूँ। (घूमता है घास खाता है नाचता है तभी दुबककर शिकारी आता है और उसे पकड़ लेता है।)

खरगोश - आह –2 बचाओ–2 (चिल्लाता है)

शिकारी - (खलनायकी स्वर में) ही ही ही ...... दूर रहकर सभी यहाँ पर, सो रहे हैं फिर आप चिल्लाकर क्यों रो रहे हैं ? ही ही ही..... कोई नहीं सुनेगा, अब तू मेरे हाथों ही मरेगा।

खरगोश - (रोते हुये) मुझे पर दया करो,मुझे छोड़ दो, मुझे तुम यह तो बताओ कि मुझे मारने से तुम्हें मिलेगा क्या ?

शिकारी - ही ही ही ....अरे तुम इतना नहीं जानते, लड़कियाँ जिस लिपिस्टिक को बड़े शौक से लगातीं हैं वह तुम्हारे ही खून से बनती है । हा हा हा....

खरगोश - (चीखता है) क्या ? ....हे मनुष्य ! क्या तुम इतने गिर गये हो ? अरे क्या तुम्हें शर्म नही आती जब मेरा खून तुम्हारे ओठों पर मुस्कुराता है ?

शिकारी - बहुत बक–बक कर रहा है चुप रह। (किन्तु अचानक खरगोश छक कर भागता है,परन्तु शिकारी उसे घेर लेता है)

खरगोश - (रोते हुये) छोड़ दो मुझको छोड़ दो मुझको, दया करो कुछ रहम करो। जीनें दो मुझको जीनें दो मुझको न मुझ पर तुम ये जुल्म करो। (तभी शिकारी पकड़ लेता है और एक दर्दनाक वार चाकू से उसकी पीठ पर करता है और वह पुनः चिल्लाता है)

खरगोश - बचाओ ! (और मर जाता है)

(तभी शेर वहाँ आ जाता है साथ में दो सिपाही कुत्ते भी)

शेर - (चीखकर) अरे..2..ऐ ! दुष्ट ! तूने क्या किया मेरे प्यारे भोले खरगोश को मार डाला। सिपाहियों पकड़ लो इसे।

(सभी आते हैं आर चिल्लाते हैं और शोक प्रकट करते है)

(दुःख भरे स्वर में)सभी –खरगोश भइया ! नहीं नहीं। ऐसा किसने किया? (रोते हैं)

शेर - अरे निर्दयी !आज फैसला होकर रहेगा,सिपाहियों इसे मजबूती

से पकड़े रहो।

बंदर - (क्रोधपूर्वक)इसके बारे में अब न सोचे महाराज, हाथ कटवा दें इसका तुरन्त अभी और आज। अब सहनशक्ति के बाहर है इस दुष्ट का आतंक,हम सब मिलकर मारें और कर दें इसका अंत। (सभी शिकारी पर टूट पड़ते हैं)

हाथी और शेर- न,न ,न ऐसा मत करो छोड़ दो इसे। इसे सजा जरूर मिलेगी। (किन्तु भीड़ की आवाज के आगे इनकी आवाज दब जाती है और भीड़ की मार से बिलखता शिकारी चिल्लाता है ......)

शिकारी - मुझे छोड़ दो माफ कर दो ....।

लोमड़ी - तुम हमें सताओगे, तो यही फल पाओगे।

बंदर - मार खाओगे, तभी तुम्हें मालूम चलेगा कि दर्द कैसा होता है। (तभी शेर चिल्लाता है-)

शेर - रुक जाओ ! (सभी मारना छोड़ देते है और डर जाते हैं)

शेर - वो पाप करता है तो इसका मतलब यह नहीं कि हम भी नीचता पर उतर आयें। छोड दो उसे

शिकारी - मै.... मैं प्रायश्चित करूँगा महाराज...... (मंच पर घूम-घूम कर गाता है)

हे प्रभु तू दया करके, मुझे माफ कर देना हे प्रभु मैं भटका हूँ, हिंसा के अंधेरे में हर तरफ दुःख ही है, इस कर्म के रेले में पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह बता देना अहिंसा की ही है विजय, क्षमा मुझे करना इतनी सी विनय तुमसे, मुझे माफ कर देना।

हाथी - प्रतिज्ञा करो कि तुम कभी अण्डा मांस नही खाओगे। निर्दोष जीवों को बेवजह नहीं सताओगे।

शिकारी - मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। अब मैं ऐसा कभी नहीं करूँगा।

सभी - हाँ हाँ महाराज ! इसे माफ कर दीजिये इससे हम यही चाहते थे।

राजा - उठो,तुम्हे माफ करते हैं जाओ और बर्बरता पूर्ण राक्षसी जीवन छोड़कर शाकाहारी जीवन व्यतीत करो और जन्म लिया है तो उसे सार्थक करो।

सभी - राजा जी की जय हो ....जय हो ......

(पर्दा गिर जाता है)

Beat This !

Number of tissue 'Pages' cut from one skin : 20 - 25
Number of tissue 'Pages' in one booklet : 360
Number of skins needed (= number of animals killed) for one booklet : 15
Yeild from one booklet :
upto 200 varakh bundles
Number of varakh sheets in one bundle : 150 - 160
Number of varakh sheet (176 cm sq) from one booklet : 200 x 150 = 30,000
Demand = 30,000 kg per year = 2.5 crore booklets per year =37.5 crore animals per year
killing rate = 12,500 animals for 1 kg of varakh

Varakh Vocabulary
Jhilli - The Layer immediately beneath the skin, also called the epidermis, which is peeled off and made into pouches in which varakh is beaten (Fig. 2.)
Auzaar - The booklet-like stack of pouches made from jhilli in which silver strips are placed and beaten (Fig. 5).
Thadaa/Khol - The thick leather sheets (Sheep Suede) between which the auzaar (booklet) is kept and hammmered.
Alagaa- The 1 inch silver strips, heated and drawn, that are beaten to obtain varakh (Fig. 6).
'999' Varakh - The 'Brand ' of varakh that is obtained from pure refined silver.
Tabaq - another word for varakh.
Varakhsaaz/Tabaqgaar/Pannigaar - The Varakh-Beater (Fig 6.)

ई मेल – पुन: प्रारंभ

चहकती चेतना के कई सदस्यों की शिकायत थी कि चहकती चेतना का ई–मेल नंबर प्रारंभ नहीं है। अब हमने पुन: ई–मेल नंबर प्रारंभ कर दिया है। आप अपनी समस्या एवंशिकायत के त्वरित समाधान व आपकी रचनायें व सदस्यता जानकारी प्राप्त करने हेतु हमें ई–मेल कर सकते हैं। हमारा मेल नम्बर है –

chehaktichetna@yahoo.com

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न 1 लोग अंग्रेजी बोलने में अपनी शान क्यों समझते हैं?

अपराजित जैन, बुलंद शहर

उत्तर- अंग्रेजों के भारत से चले जाने पर भी भाषा की गुलामी नहीं गई।

प्रश्न 2 प्रतिमा के पीछे दर्पण क्यों लगा होता है?

विकास जैन, खेड़ी

उत्तर- यह तीर्थकर के अष्ट प्रातिहार्य में से एक -भामण्डल का प्रतीक होता है।

प्रश्न 3 देश बड़ा है या धर्म?

विजय कुमार जैन, इच्छावर

उत्तर- धर्म बड़ा है, क्योंकि धर्म रहेगा तो देश शांति से रह पायेगा अन्यथा बरबाद हो जायेगा।

प्रश्न 4 क्या किसी की जान बचाने पर डॉक्टर को अभयदान का पुण्य मिलता है?

कमल कुमार जी जैन, बिजावर

उत्तर- डाक्टर व्यापार के लिये इलाज करता है न कि परोपकार के लिये। यदि इलाज के समय परोपकार और दया की भावना रहती हो और उचित पैसा लेता हो तो पुण्य भी लग सकता है।

प्रश्न 5 आकाश से बड़ा कौन?

सुनील कुमार जैन, सारंगपुर

उत्तर- ज्ञान सबसे बड़ा है क्योंकि वह अलोकाकाश को भी जानता है।

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

क्या आप जानते हैं?

क्रीम एवं आफ्टर शेव लोशन

क्रीम एवं आफ्टर शेव लोशन से होने वाली जलन और प्रतिक्रिया मालूम करने के लिये खरगोश और चूहे के बाल रेजर से साफ किये जाते हैं, फिर उनकी चमड़ी पर टेप चिपकाया जाता है, फिर वह टेप एक ही झटके में खीचा जाता है, चमड़ी निकल जाने पर उस पर क्रीम या लोशन डालकर उसका असर देखा जाता है।

रचनायें आमंत्रित

चहकती चेतना में प्रकाशन हेतु आप
कहानी, कवितायें, प्रसंग
ज्ञानवर्धक बातें, ज्ञान पहेली
चित्रकला
आदि भेज सकते हैं।
ध्यान रहे रचनायें साफ अक्षरों में होना चाहिये
पत्रिका के योग्य होने पर उसे प्रकाशित किया जायेगा।

कविता

बढ़े चलो

बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो बढ़े चलो
मोक्षमार्ग में सदा चले चलो चले चलो

सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
सत्य धर्म साथ हो तो क्यों किसी से हार हो
कर्म के शत्रुओं को दले चलो दले चलो
मोक्षमार्ग में सदा बढ़े चलो बढ़े चलो ॥1॥

नन्हें मुन्ने वीर हम धर्म को बढ़ायेंगे
ये धर्म है वीर का हम वीर बन जायेंगे
वस्तु तत्व जानकर चले चलो चले चलो
मोक्षमार्ग में सदा बढ़े चलो बढ़े चलो ॥2॥

जिन्हें जिनमंदिर दूर लगता है
उन्हें अपना नरक पास समझना चाहिये।

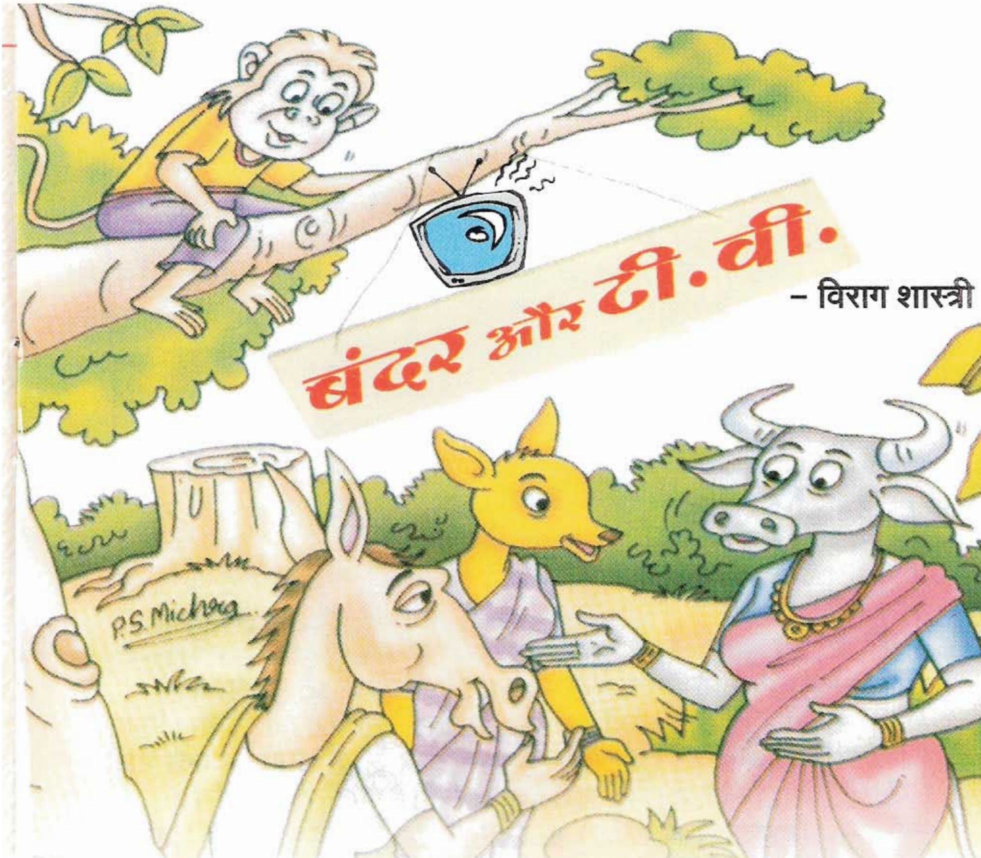

बंदर और टी.वी.

– विराग शास्त्री

सन्मति वन का वातावरण बहुत शांत था। सभी जानवर परपस्पर एक दूसरे का सम्मान करते थे। धर्म की चर्चा और गतिविधियों से सन्मति वन की प्रशंसा आसपास के अनेक जंगलों में होने लगी थी। यही सुनकर सन्मतिं वन में पड़ोस वाले जंगल से एक बंदर आया था। उसका नाम चंपू था। सन्मति वन में नया होने से उसके कोई दोस्त नहीं थे। वह बहुत बोर होने लगा था। सन्मति वन के जानवर रोज शाम को एक जगह जमा होकर स्वाध्याय किया करते थे। चंपू बंदर को लगता कि यहाँ सभी जानवरों के दोस्त हैं तो सभी कितने मिलजुल कर रहते हैंऔर हंसी मजाक भी करते हैं। पर ये रोज शाम को पेड़ के नीचे जमा होकर क्या करते हैं? आज जाकर देखूँगा आखिर वे सब करते क्या हैं ? अपनी योजना के अनुसार वह उस दिन शाम को वह जानवरों के पीछे चुपचाप जाकर बैठ गया। वहाँ पण्डित हिरणजी 'मैं कौन हूँ' विषय पर प्रवचन कर रहे थे। पर

रहे थे । पर आतमा की ये सुन्दर बातें चंपू की कुछ समझ में नहीं आ रहीं थीं । उसे लगा कि ये न जाने किस लोक की बातं कर रहे हैं क्योंकि उसने धर्म की चर्चा सुनी ही नहीं थी । वह वापस अपने पेड़ पर आकर सोचने लगा - मैं अपना मनोरंजन कैसे करुँ ? अचानक उसे याद आया कि शहर के बच्चे टी.वी. देखकर अपना समय बिताते हैं। यदि मैं भी एक टी.वी. ले आऊँ तो मेरी समस्या अपने आप समाप्त हो जायेगी । फिर मेरे भले ही मेरे कोई दोस्त न बनें तो भी टी.वी. मेरा सबसे अच्छा दोस्त होगा । दिन भर अलग-अलग चैनल पर कार्यक्रम देखूँगा और मैं सुखी हो जाऊँगा । ऐसा निर्णय कर वह शहर की ओर चल पड़ा ।

शहर जाते समय उसे एक पेड़ के नीचे परम शांत मुद्रा के धारी मुनिराज दिखे । उनकी शांत मुद्रा देखकर वह सोचने लगा कि इनके पास तो मकान, परिवार तो है ही नहीं और कपड़े और टी.वी.भी नहीं हैं, फिर भी इतनी शांति और सौम्यता कैसे ? बिना टी.वी. के इतने सुखी ! यह तो बड़ा आश्चर्य है । अरे ! ये मैं किस सोच में पड़ गया । मैं तो टी.वी. अवश्य लाऊँगा । यह सोचकर वह और आगे बढता गया । वह नगर पहुँचा तो पानी पाने के लिये एक घर में पहुँच गया । खिड़की से झांककर देखा तो अंदर तीन बच्चे टी.वी. देख रहे थे । तभी उनमें से एक लड़का अपनी बहन से बोला– मुझे सोनी चैनल पर मैच देखना है रिमोट मुझे दो

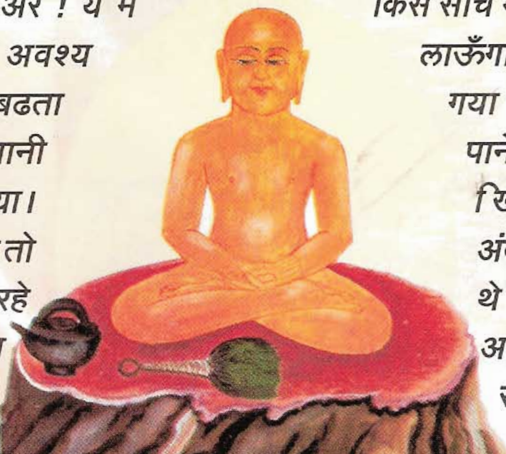

बहन बोली– नहीं पहले मैं स्टार प्लस का सीरियल देखूँगी बाद में तुझे मैच देखने दूँगी। इतने में दूसरा भाई बोला – तुम दोनो हटो। अब मैं पोगो चैनल देखूँगा, मेरा फेवरेट कार्टून शो आने वाला है। इस बात पर तीनों में झगड़ा होने लगा। गुस्से में छोटे लड़के ने अपनी बहन को चांटा मार दिया, बहन ने गुस्से में उसे गाल में काट लिया। बडे भाई ने बहन की चोटी पकड़ के खीचीं। इस तरह तीनों में बहुत जोर–जोर से झगड़ा होने लगा। इतने में छोटे भाई ने रिमोट छीनकर टी.वी. पर मार दिया तो टी.वी. फूट गई। बहन की नाक से खून निकलने लगा। इतने में मम्मी बाजार से लौटींतो घर का दश्य देखकर बहुत दुःखी हुईं और तीनों को पिटाई लगाई।

बंदर ने यह सारी घटना देखी तो उसका मन कांप गया। उसने सोचा – यदि मैंटी.वी. ले जाऊँगा तो धीरे–धीरे मेरे दोस्त बन जायेंगे और वहाँ भी झगड़ा होने लगा तो सन्मति वन की शांति भंग हो जायेगी। नहीं नहीं! मैंऐसा पाप नहीं करूँगा। मैं टी.वी. नहीं लाऊँगा और हर जंगल में जाकर सबको बताऊँगा कि टी.वी. से क्या–क्या हानियाँ हैं?

इसके बाद सन्मति वन गया और रोज शाम को होने वाले स्वाध्याय में बैठने लगा और हर रविवार को मंदिर जी में पूजा में भाग लेने लगा। इस तरह उसके बहुत सारे दोस्त हो गये। वह भी उनके साथ धर्म की चर्चा करने लगा। अब उसे शांति के साथ आनंद भी आने लगा।

आपके ब्रश से .....

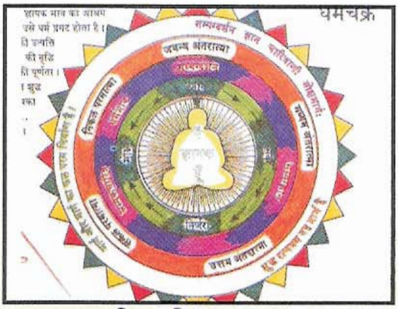

प्रिया मिलन शाह

रोमी अनिल शाह, दहीसर, मुम्बई

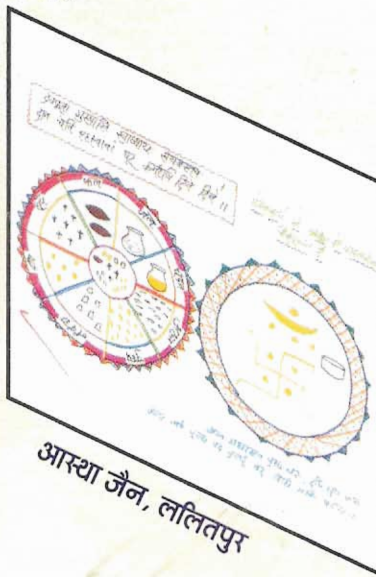

आस्था जैन, ललितपुर

श्रुति मोदी, नागपुर

मानसी जैन, नागपुर

चक्कर

संकलन
निशंक जैन (देवलाली)

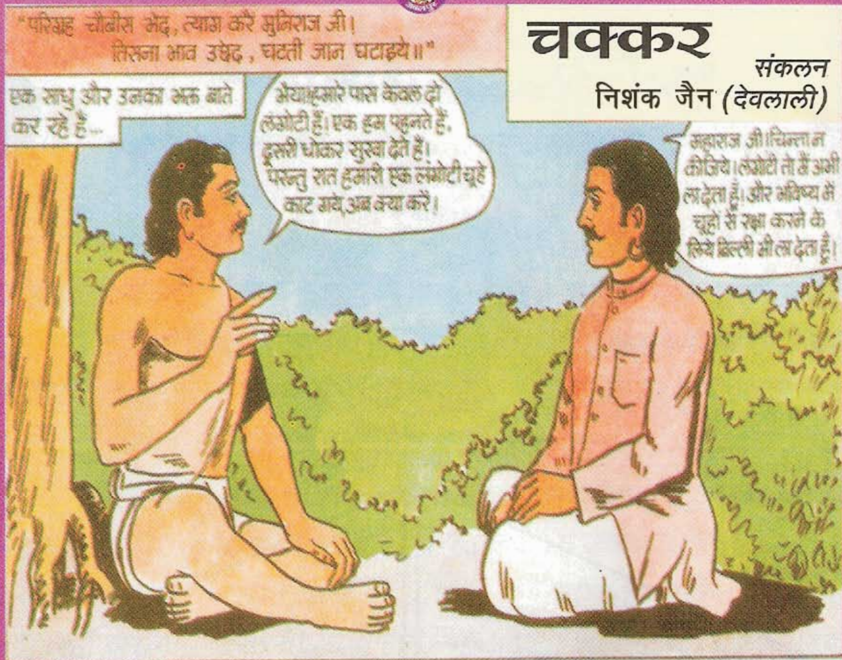

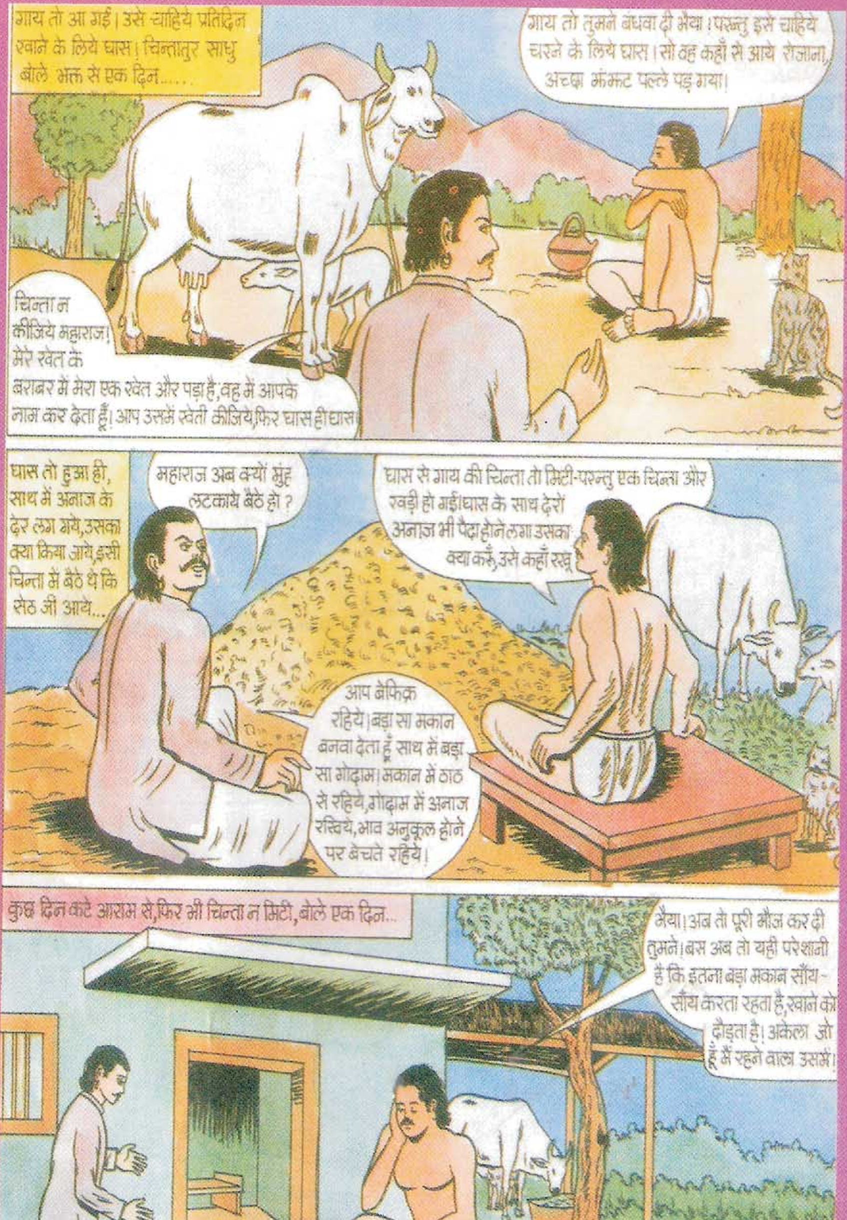
गाय तो आ गई। उसे चाहिये प्रतिदिन खाने के लिये घास। चिन्तातुर साधु बोले भक्त से एक दिन......
गाय तो तुमने बंधवा दी भैया। परन्तु इसे चाहिये चरने के लिये घास। सो वह कहाँ से आये रोजाना, अच्छा झंझट पल्ले पड़ गया।
चिन्ता न कीजिये महाराज! मेरे खेत के बराबर में मेरा एक खेत और पड़ा है, वह मैं आपके नाम कर देता हूँ। आप उसमें खेती कीजिये, फिर घास ही घास।
घास तो हुआ ही, साथ में अनाज के ढेर लग गये, उसका क्या किया जाये, इसी चिन्ता में बैठे थे कि सेठ जी आये...
महाराज अब क्यों मुंह लटकाये बैठे हो ?
घास से गाय की चिन्ता तो मिटी-परन्तु एक चिन्ता और खड़ी हो गई। घास के साथ ढेरों अनाज भी पैदा होने लगा उसका क्या करूँ, उसे कहाँ रखूं
आप बेफिक्र रहिये। बड़ा सा मकान बनवा देता हूँ साथ में बड़ा सा गोदाम। मकान में ठाठ से रहिये, गोदाम में अनाज रखिये, भाव अनुकूल होने पर बेचते रहिये।
कुछ दिन कटे आराम से, फिर भी चिन्ता न मिटी, बोले एक दिन...
भैया। अब तो पूरी मौज कर दी तुमने। बस अब तो यही परेशानी है कि इतना बड़ा मकान सॉय-सॉय करता रहता है, खाने को दौड़ता है। अकेला जो हूँ मैं रहने वाला उसमें।
मेरे दिमाग में आपकी यह समस्या भी है, जल्दी ही एक सुन्दर सी लड़की देख कर आपका विवाह करा दिया जायेगा। सारी परेशानी समाप्त हो जायेगी